Q. what is public debt? Critically examine the various method of repayment of public debt.

Ans→ सार्वजनिक ऋण राज्य द्वारा आय प्राप्त करने का एक साधन है। सार्वजनिक ऋण उस ऋण को कहते हैं जिसे कि राज्य अपनी प्रजा से अथवा अन्य देशों से या उसके नागरिकों से लेता है। सरकार जब उधार लेती है तो उससे लोक ऋण का जन्म होता है। सरकार देश के अन्दर भी ऋण ले सकती है और बाहर से भी अथवा दोनों जगहों से भी। आमतौर पर सरकार लोक ऋण बाण्ड के रूप में होता है। इन बाण्डों में सरकार यह वादा करती है कि वह निर्धारित समय में मूलधन सहित ब्याज की भी अदायगी करेगी।

जब कभी सरकार को आय से अधिक व्यय करना पड़ता है तो उसे ऋण की व्यवस्था करनी पड़ती है। सरकार जो ऋण प्राप्त करती है उसे एक निश्चित अवधि के बाद उसका ब्याज सहित भुगतान करना होता है। Adam Smith के अनुसार "सार्वजनिक ऋण से सुस्त एवं फिजूलखर्ची जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है।" परन्तु आधुनिक अर्थशास्त्री के अनुसार सार्वजनिक ऋण विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। यह अल्पविकसित देशों को ऋण प्रदान करता है जिससे वह अपना विकास करता है तथा वह आपदा आने पर भी ऋण लेता है। अल्पविकसित देश के विकास में सार्वजनिक ऋण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अल्पविकसित देश अन्य विकसित देशों से ऋण लेकर अपना विकास करता है।

Scanned by CamScanner

सार्वजनिक ऋण का भुगतान करने के मुख्य तरीका निम्नलिखित हैं →

(1) ऋण-नकार (Debt Repudiation) :→ इस रीति के अन्तर्गत सरकार ऋण का भुगतान करने से इन्कार कर देती है और इस तरह स्वयं को ऋण के भार से मुक्त कर लेती है। सरकार नकार की नीति आन्तरिक और बाह्य दोनो प्रकार के ऋणों के संबंध में अपना सकती है।

सन् 1917 ई. में सोवियत सरकार द्वारा ऐसा किया गया था जबकि उसने जार कालीन ऋणों को अदा करने से मना कर दिया था। U.S.A. के कुछ राज्यों ने भी 1861-65 के गृह युद्ध के पूर्व ऐसा ही किया ~~था~~ था। उन्होंने अंग्रेज नागरिकों से लिए गए ऋणों की अदायगी से इन्कार कर दिया था।

यह नीति देखने से आसान लगती है पर यह एक अनैतिक तथा बेईमानीपूर्ण पग माना जाता है।

(2) वार्षिक वृत्ति (Terminal Annuity) :→ इस रीति के अन्तर्गत सरकार दीर्घकालीन ऋण का भुगतान वार्षिक किस्तों के रूप में करती है। इस रीति द्वारा सरकार पर धीरे-धीरे ऋण का दायित्व कम होता चला जाता है तथा भुगतान की अंतिम तिथि पर एकदम समस्त ऋण का भुगतान नहीं करना पड़ता है।

(3) ऋण परिवर्तन (Loan Conversion) :→ ऋण की बदली का अर्थ है पुराने ऋण का नये ऋण में परिवर्तन। इस रीति के अन्तर्गत, ऋण की वास्तविक अदायगी नहीं की जाती, बल्कि ऋण

Scanned by CamScanner

DATE

ऋण का केवल रूप बदल दिया जाता है। ऋण बदली की प्रक्रिया से मतलब होता है ऊँची ब्याज दर वाले ऋण को कम ब्याज-दर वाले ऋण में परिवर्तन करना।

(4) ऋण परिशोधन कोष (Sinking fund):→ इस रीति के अनुसार सरकार एक कोष की स्थापना कर लेती है तथा इस कोष में सरकार प्रतिवर्ष इतनी रकम डालती रहती है कि निश्चित तिथि पर ब्याज सहित मूलधन का भुगतान सरलता पूर्वक किया जा सके। इस रीति के अनुसार सरकार दो तरह से धन एकत्रित करती है-

(1) अपनी वार्षिक आय में से कुछ रकम बचाकर इस कोष में जमा करती है या ऋण लेकर इस कोष में जमा करती है।

J.K. Mehta ने लिखा है ऋण परिशोधन कोष की पद्धति एक सर्वोत्तम तरीका है। यह एक क्रमबद्ध प्रणाली है तथा कोई भी इसे किसी भी विशेष ऋण की आवश्यकताओं की पूर्ति में समायोजित कर सकता है।

(5.) क्रमानुसार भुगतान (Payment by Serial Number) :→ ऋणभुगतान की इस रीति में सरकार कुछ ऐसी व्यवस्था करती है कि जारी किए गए बान्डस में से कुछ की परिपक्वता अवधि प्रतिवर्ष पूरी हो जाए। इस रीति में ऋण का एक भाग प्रतिवर्ष चुकता कर दिया जाता है।

(6) लाटरी द्वारा भुगतान (Payment by Lottery):→ यह रीति भी क्रमानुसार भुगतान का ही एक संशोधित रूप है। अन्तर केवल इतना ही है कि इस रीति में बांड्स की संख्या प्रारम्भ में

Scanned by CamScanner

क्रमानुसार निश्चित नहीं की जाती बल्कि लॉटरी द्वारा प्राप्त की जाती है। इसका सबसे बड़ा अवगुण यह है कि इससे विनियोजकों को ऋण वापस मिलने के निश्चित समय पता नहीं रहता है।

7) **ऋण का पुनःशोधन (Refunding of loan):→** इस रीति के अन्तर्गत सरकार नया ऋण लेकर पुराने ऋण का भुगतान करती है। अधिकतर सरकार ऐसा तभी करती है जबकि उस पर ऋण का भार बहुत अधिक हो जाता है। इस प्रकार पुनः शोधन ऋण परिवर्तन से ही मिलता जुलता है पर इस दोनों में अन्तर है।

) **बजट की बचत का उपयोग :→** सरकार अपने बजट में व्यय को आय की तुलना में कम रखकर तथा इस तरह बचत करके उसका उपयोग ऋण भुगतान में करती है। वास्तव में यह ऋण शोधन का पुराना तरीका है। वर्तमान युग में सरकार का कार्य इतना व्यापक हो गया है कि उसे बजट की बचत के अपेक्षा घाटे का बजट बनाने पड़ते है, इस रीती का कोई महत्व नही है।

पूंजी कर :→ पूंजी-कर अस्थाई ऋण भार को कम करने में बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकता है। जब सरकार विभिन्न प्रकार के कर लगाने में स्वयं को असमर्थ पाती है तो उस समय सरकार को पूंजी कर लगाने की नीति अधिक सहायक साबित होती है।

Scanned by CamScanner

DATE

निष्कर्ष: उपर्युक्त सभी उदाहरण ऋण के पुनर्भुगतान के तरीके हैं। जिनमें सबसे बेकार तरीका ऋण निषेध है। बाकि सारे - ठीक - ठाक है। Proff. Dalton के अनुसार "सम्पूर्ण वाद विवाद के बीच मेरा अपना मत है कि ऋण को निकालने के हेतु पूंजी कर अपने गुणों के कारण सबसे अच्छी नीति है।"

Scanned by CamScanner